# मिशन शिक्षण संवाद

# बाल साहित्य सृजन

**माह : जुलाई 2025**

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद, बाल साहित्य सृजन टीम

01/07/2025

मंगलवार

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### बारिश की बूँदे

बारिश आयी, बारिश आयी,
बारिश की बूँदे छत पर आयी।
मिट्टी ने भीनी खुशबू फैलायी,
खुशबू सबके मन को भायी।।

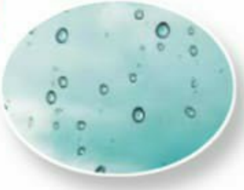

जैसे बादल ने बूँदों को भेजा,
बच्चों ने छाते को खोजा।
दौड़कर घर से कागज लाये,
पानी में नाव खूब चलाये।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

## 2

### ठण्डी हवा

बरसात के मौसम में,
ठण्डी हवा है चलती।
प्राकृतिक सुहावनी,
पेड़ों के पास मिलती।।

मन को प्रसन्न करती,
पसीने को सुखाती।
गर्मी में काम करने का,
जोश भर के जाती।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

## 3

### बरसाती (रेनकोट)

बारिश का मौसम जब आता,
बरसाती की याद दिलाता।
जलरोधी कपड़े से बनता,
बरसात में पहना जाता।।

कोट जैसा आकार होता,
सभी रंगों में बनाया जाता।
उचित मूल्य पर बेचा जाता,
'रेनकोट' भी कहलाता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

## 4

### छाता

रंग-बिरंगा मेरा छाता,
बारिश से है मुझे बचाता।
देखो यह सतरंगी छाता,
सबके मन को है ललचाता।।

पकड़ के छाता छपक-छपक,
उछल-कूद मैं करती हूँ।
बारिश आयी, बारिश आयी,
नाच-नाचकर कहती हूँ।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ

2/07/2025

बुधवार

# बाल साहित्य सृजन

**1**

## बारिश और मसाला चाय

बारिश और मसाला चाय,
का साथ है बहुत ही प्यारा।
बारिश मे इसे लेने से रहता,
है तन मन मे एहसास न्यारा।।

मसाला चाय पानी को उबालकर,
कई मसालो को डालकर बनती।
अदरक,काली मिर्च, लौंग,इलायची,
इनकी चाय मे बहुत प्रमुखता होती।।

**रचना**

इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

**2**

## बारिश और पकौड़े

बारिश का मौसम आया,
झमाझम-झमाझम वर्षा लाया।
गरमा गरम पकौड़े बनाए,
हम सब ने मिलकर खाए।।

हरी मिर्च की चटनी बनाई,
पकौड़े के ऊपर लगाई।
गरमा गर्म चाय भी बनाई,
मेहमान जो आए उन्हें भी खिलाई।।

**रचना**

माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

**3**

## बारिश और समोसे

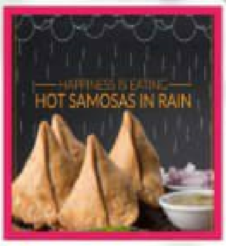


बारिश का मौसम आया,
समोसे खाने को मन भाया।
परिवार संग समय बिताने का,
एक अच्छा बहाना आया।।

काले -काले बादल छाये,
बारिश संग अपने लाये।
बच्चों ने बारिश में खूब नहाया,
सबने मिलकर समोसा खाया।।

**रचना**

आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

**4**

## बारिश और वेज सूप

छुट्टी होते हम सब भागे,
बादल नभ में शोर मचाते।
छतरी ना थी हमारे पास,
आई टप-टप ठंडी बरसात।।

भीगे जब हम घर पर पहुंचे,
मां प्यार से सब कुछ पुछे।
बोले जल्दी कपड़े बदलों,
फिर गर्म वेज सूप पी लों।।

**रचना**

नीलम भास्कर ( स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

03/07/2025

# बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

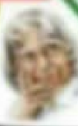

1

## बारिश

हुई धरती जब बहुत गरम,
बारिश आयी छम छम छम।
सूखे ताल भर गये सारे,
बारिश में नहाये खूब हम।।

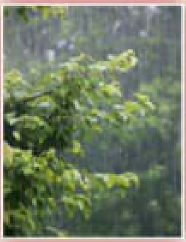

अब धान की रोपाई होगी,
हरियाली खूब छाई होगी।
मोर नाचेंगे पंख पसार,
सबने खुशी मनाई होगी।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

## सावन की बारिश

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई,
साथ में मन में उमंग जागाई।
बारिश की धुन में देखो,
खेतों में हरियाली आई॥

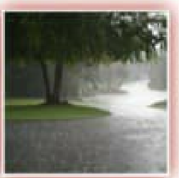

भीनी भीनी महक से देखो,
जन-जन में खुशहाली आई।
धान की खेती में मानो,
जैसे फिर से जान है आई॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

## बारिश और पकौड़ी

काली-काली घटा है छाई,
देखो-देखो बारिश आई।
तपती और जलती गर्मी से,
सब ने ही है राहत पाई।

सौंधी मिट्टी की खुशबू ने,
जीवन की बगिया महकाई।
मज़ा हो गया चार गुना जब,
सबने चाय-पकौड़ी खाई ।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

## बरसात

तपन से व्याकुल हिय को,
मिला सुखद अहसास।
रिमझिम-रिमझिम बरखा आई,
मौसम बना है खास।।

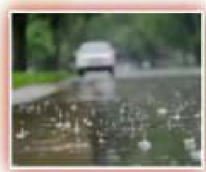

बादलों में मची है हलचल,
बूंदों की बौछारों के चल दिये दल,
सुधारस की आमद देख,
वसुंध रानी देखो गई मचल।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

04/07/2025

शुक्रवार

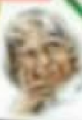

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### बारिश और नाव

सब गर्मी से झुलस रहे थे,
बारिश को तरस रहे थे।
आसमान में बादल छाए,
देख देखकर सब हर्षाए।।

राजू, पिंकी बारिश में नहाए,
कागज की सब नाव बनाए।
नाव तैराकर दौड़ कराई,
ताली बजाकर खुशी मनाई।।

पूनम नैन ( स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

## 2

### बारिश की बूँदें

बारिश की नन्हीं-नन्हीं बूँदे,
मौसम सुहावना बना रही।
पेड़ो की नयी-नयी कोपलें,
हरियाली को फैला रही।।

रिमझिम वाली बारिश में,
नहाने का मजा आ रहा।
तरह-तरह के पकवान,
खाने का मन भी कर रहा।।

अनुप्रिया यादव ( स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

## 3

### बारिश

काले-काले बादल जब,
घुमड़-घुमड़ कर आते है।
फिर धरती पर बादल,
खूब पानी बरसाते हैं।।

मोर पंखों को फैलाकर,
सुन्दर नाच दिखाते हैं।
वन, उपवन मे चारो ओर,
सुन्दर फूल खिल जाते हैं।।

मृदुला वर्मा ( स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

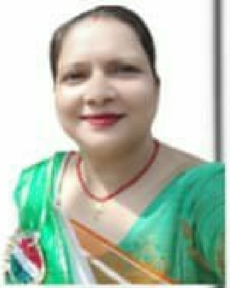

## 4

### बरसात का मौसम

आया बरसात का मौसम,
बारिश में छा रहीं हैं मस्ती।
पानी भर रहा गलियारों में,
बच्चे चला रहे हैं कश्ती।।

छम-छम बारिश मे भीगकर,
शरीर में छाने लगी है सुस्ती।
गरम पकौड़े संग पीकर चाय,
तन-मन में छाने लगी है स्फूर्ति।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

05.07.2025 शनिवार

# बाल साहित्य सृजन

## 1 समोसा

बारिश की बूँदों संग,
चाय का प्याला।
समोसा हो साथ,
तो दिन हो निराला।।

दोस्तों की महफ़िल,
गपशप का दौर।
समोसा बिन फीका,
हर खुशी का शोर।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

## 2 भजिया

भजिया बनती शानदार,
चाय के साथ लगे दमदार।
तली मिर्च है उसका यार,
जायका होता है जोरदार।।

इसे कहते पकौड़ा, भज्जी,
शामिल होती सभी हैं सब्जी।
नाश्ता बड़ा कुरकुरा होता,
खाने में मजा बहुत है आता।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

## 3 कचौड़ी

कचौडी खाये हर परिवार,
जब-जब आता है त्योहार।
दाल, मसाले, तेल आटे से,
कचौडी बनती है शानदार।।

नाश्ता व भोजन संग खाते,
मेहमानों को खूब खिलाते।
बच्चों को भी बहुत हैं भाती,
चाय संग पसंद की जाती।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

## 4 पकौड़ी

गरम पकौड़ी लगती मजेदार,
चटनी संग लगती जायेकेदार।
सबके मन को भाये खूब,
छोटे- बड़े सभी खायें खूब।।

आलू, बेसन, तेल से बनती,
प्याज बेसन की भी बनती।
जाड़ा हो या बरसात,
चाय के संग बढ़ता स्वाद।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

मिशन शिक्षण संवाद
• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •
07/07/2025 सोमवार

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### पकौड़ी

झमाझम बारिश में गरम चाय,
सबको पकौड़ी याद आए।
आलू, प्याज, पनीर, बैंगन,
इसमें मिलाओ फिर बेसन।।

पकौड़ी स्वादिष्ट बनाओ सभी,
बच्चे, बूढ़े खाओ सभी।
तेल या घी में बनाओ,
सॉस या चटनी से खाओ।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

## 2

### समोसा

खाने में चटपटा लगे है,
अति स्वादिष्ट, अनोखा है।
आलू और अन्न का मिश्रण,
मिले सब जगह चोखा है।।

बच्चे, बूढ़े सब नर-नारी,
इसको खाकर खुश होते।
मानो सब्जी-पूड़ी खाते,
देख इसे सब धीरज खोते।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० रजवाना
सुल्तानगंज, मैनपुरी

## 3

### कचौड़ी

आलू और आटे से बनती,
डालो खूब मसाले।
मन नहीं भरता इससे,
स्वाद में कितनी खा ले।।

बारिश के मौसम में,
मन को भाती खूब कचौड़ी।
संग गर्म चाय के,
ले लो चटनी थोड़ी-थोड़ी।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

## 4

### पूड़ी

गरम-गरम और ताजी-ताजी,
गोल मटोल ना कहीं से टेड़ी।
सबका प्यारा भोजन है,
हलवा, खीर, सब्जी और पूड़ी।।

गरम तेल में नहा कर आए,
सब बच्चों के मन को भाए ।
लेकिन रोज़ ना इसको खाना,
वरना पड़ जाएगा रोना।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

# बाल साहित्य सृजन

1

## चातुर्मास

चातुर्मास का अर्थ है,
वे चार महीने होते।
जब भगवान विष्णु,
गहरी निन्द्रा में सोते।।

देवशयनी एकादशी से,
होता इसका प्रारम्भ।
कड़के बिजली, गरजे बादल,
होता बारिश का आगमन।।


रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

2

## बर्षा

देखो बच्चों! वर्षा आयी,
चारों ओर हरियाली छायी।
नदियाँ कल-कल बह रही हैं,
चिड़ियाँ चीं-चीं कर रही हैं।।

रंग-बिरंगे फूल हैं फूले,
तितली, भौरें फूल पर डोले।
कोयल आम के पेड़ पर बोले,
पेड़ों पर ड़ले सावन के झूले।।


रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

3

## कड़कती बिजली

बारिश में बिजली कड़की,
बादल हैं भूरे-काले।
आसमान में गरज रहे थे,
मस्त उड़ें मतवाले।।

तभी कड़कती बिजली देखी,
ड़र कर मन घबराया।
कहीं गिरे न बिजली ऐसी,
तभी बादल उड़कर आया।।


रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

4

## बाढ़

एक प्राकृतिक आपदा,
बाढ़ जो है कहलाती।
भारी बारिश, बाँध टूटने से,
तीव्र गति से बाढ़ आती।।

गाँव, कस्बे, शहर को,
जलमग्न कर देती।
जन-जीवन की हानि करती,
नदियाँ उफान लेती।।


रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

09/07/2025

बुधवार

# बाल साहित्य सृजन

1

## वर्षा और धान

वर्षा से धान का बना,
सम्बन्ध है बहुत प्यारा,
वर्षा के समय धान से,
लगता है खेत बहुत न्यारा।।

धान मे मानो किसान के,
जैसे बसते है समूचे प्राण।
वर्षा से ही धान लहलहाते,
जिसे देखकर होता उसे गुमान।।

**रचना**
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2

## बरसता सावन

झूमकर बरसता सावन आया,
ठंडी ठंडी बौछार लाया।
तन-मन जब पानी में भीगे,
मन खूब आनंदित होवे।।

काली कोयल कू कू बोले,
पपीहा पीहू पीहू बोले।
चारों ओर हरियाली छाई,
सबके ही मन को खूब भहाई।।

**रचना**
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3

## वर्षा और इन्द्रधनुष

बारिश और धूप का,
जब मिलन होता।
आकाश में सात रंगों का,
इन्द्रधनुष तब दिखाई देता।।

प्यारे-प्यारे बच्चों को,
इन्द्रधनुष खूब भाता।
छूने को इन्द्रधनुष को,
सबका मन करता।।

**रचना**
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4

## वर्षा ऋतु के त्योहार

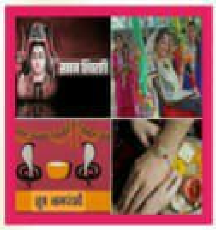

वर्षा ऋतु बहुत प्यारी आयी,
त्योहारो की बहार है लायी।
रक्षाबंधन, जन्माष्टमी है प्यारे,
तीज,ओणम भी लगते न्यारे।।

यह सारे त्योहार भारत की शान,
अपनी संस्कृति की कराते पहचान।
हम सब इनको बड़े प्रेम से है मनाते,
वर्षा ऋतु के त्योहार हमे बहुत भाते।।

**रचना**
नीलम भास्कर ( स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

# बाल साहित्य सृजन

1

## नाव

बारिश जब-जब आती है,
कितनी ख्वाहिश लाती है।
इन्द्रधनुष का एक झूला हो,
मन में यह बात आती है।।

कागज की हो बड़ी सी नाव,
पानी पर सरपट चल जाये।
ना तो डूबे और ना वो गले,
घूमने हम सब निकल जाये।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

## पकौड़े

पकौड़े का आनंद तो,
बरसात के मौसम में आता है।
जब गरम-गरम पकौड़े,
कोई बना करके खिलाता है॥

रिमझिम-रिमझिम बारिश हो,
और साथ में चटनी पकौड़े हो।
इन दोनों का साथ तो जैसे,
कोई राम मिलाई जोड़ी हो॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

## जलेबी

गरम-गरम कुरकुरी जलेबी,
बारिश में सबको भाती है।
हम सब मिलकर खाते है,
जब-जब भी बारिश आती है।।

मैदा चीनी से है ये बनती,
राष्ट्रीय मिठाई कहलाती है।
रबड़ी के संग जब भी खाते,
सुखद अनुभूति दे जाती है।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

## छाता

रंग-बिरंगा है मेरा छाता
बारिश से वो मुझे बचता ।
धूप लगे जब कभी हमें तो,
झटपट से छांव बन जाता।।

बच्चे-बड़े सबके काम है आता,
मुश्किल में सहायक बन जाता।
मुझको प्यार मेरा छाता,
साथ लेकर बाजार जाता।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

# बाल साहित्य सृजन

1

## सावन आया

सावन आया,खुशियाँ लाया,
हर प्राणी के मन को भाया ।
अम्बर ने पानी बरसाया,
धरती का आँचल मुसकाया।

मोर, पपीहा, कोयल बोलें,
पेड़ों पर अब डाल दो झूलें।
सावन के हम गीत गाकर,
पेंग बढ़ाकर नभ को छू लें।।

पूनम नैन ( स० अ०)
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

## हरियाली

चारो तरफ हरियाली,
देखो बच्चों छा रही।
बरसात के मौसम में,
कोंपलें भी निकल रही।।

रंग-बिरंगी क्यारियों से,
प्रांगण सुन्दर लग रहा।
सुन्दर-सुन्दर फूलों से,
विद्यालय महक रहा।।

अनुप्रिया यादव ( स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

## सावन का महीना

सावन के महीने में जब,
काली घटा छा जाती।
बारिश से धरती की,
सारी तपन मिट जाती।।

दादुर, मोर और पपीहा,
फिर खूब शोर मचाते।
पेड़ों पर पड़ जाते झूले,
सब खुशी के गीत गाते।।

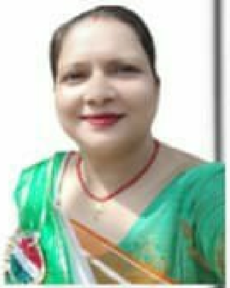

मृदुला वर्मा ( स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

## उमड़े मेघ

नील गगन में उमड़े मेघ,
छा रही काली घनघोर घटा।
कहीं बूँद-बूँद कहीं मूसलाधार,
कहीं बहती स्वच्छंद हवा।।

इंद्रधनुषी छटा बिखेरे,
सतरंगी आभा छाये।
पल-पल बदले मौसम करवट,
भौर में निशा हो जाए।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

12.07.2025

# बाल साहित्य सृजन

शनिवार

## 1

## इडली

इडली ओ इडली सुबह की रानी,
गोल सफेद सादगी की कहानी।
चावल और उड़द से है बनती,
सांभर के संग थाली में सजती।।

इडली है संस्कृति और परम्परा,
दक्षिण का गौरव इडली से जुड़ा।
सांभर में डूब कर इडली मुस्कुराए,
हर कौर में स्वाद का जादू बिखराए।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात


## 2

## डोसा

खा लो भर प्लेट ये डोसा,
लाजवाब क्या खूब है डोसा।
सांभर इसका परम मित्र है,
नारियल की चटनी सचित्र है।।

दक्षिण का व्यंजन विशेष है,
उड़द चावल से मिला वेश है।
खाने में जायका स्वादिष्ट है,
दक्षिण उत्तर इत्र मित्र हैं।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी


## 3

## साम्भर वड़ा

चना, मूंग, उड़द की दाल से,
बनता है बहुत स्वादिष्ट बड़ा।
दक्षिण भारत में इसे कहते हैं,
साम्भर बड़ा, मेदू बड़ा।।

नाश्ते व खाने में खाया जाता,
मुंह में जाकर झट घुल जाता।
सेहतमंद होता साम्भर बड़ा,
इसका स्वाद बहुत ही भाता।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर


## 4

## उत्तपम

दक्षिणी भारत का व्यंजन,
लगता सबको प्यारा व्यंजन।
पौष्टिक यह होता है,
सुपाच्य यह होता है।।

रवा से यह बनता है,
टमाटर, गाजर,पड़ता है।
प्याज, शिमला मिर्च,
से स्वाद बढ़ता है।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

# बाल साहित्य सृजन

## 1

## आषाढ़

वर्षा ऋतु का प्रथम मास है,
सबको ही बारिश की आस है।
मानसून की आई बहार,
रिमझिम-रिमझिम पड़ें फुहार।।

आया माह आषाढ़ सुहाना,
बारिश में सब खूब नहाना।
लेकिन इतना ध्यान है रखना,
पानी कहीं ना रुकने देना।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

## 2

## सावन

वर्षा आयी, वर्षा आयी,
सावन के महीने में।
बादल गरजे घटाएँ छायी,
सावन के महीने में।।

हरी-भरी है धरती अपनी,
चारों ओर हरियाली है।
झूला झूले बहन बेटियाँ,
मिलकर सखियाँ सारी है।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

## 3

## भादो

श्रावण मास के बाद,
भादो का महीना कहते हैं।
भाद्रपद में जन्मे श्री कृष्णा,
जन्माष्टमी पर्व मनाते हैं।।

भादो में आते हैं त्योहार,
अच्छी फसल का है महीना।
चलो त्यौहार के मौसम में,
ये सिखाएँ मिलकर जीना।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़
करहल, मैनपुरी

## 4

## आश्विन

हिन्दू कैलेण्डर का मास साँतवा,
होता पितृ पक्ष आरंभ।
वर्षा ऋतु की समाप्ति,
शरद ऋतु का प्रारंभ।।

शारदीय नवरात्र आते,
आता दशहरे का त्योहार।
कन्या पूजन करते सब,
मिलती खुशियाँ अपार।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

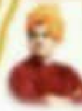

# बाल साहित्य सृजन

1

## सावन की फुहार

सावन के काले मेघों से,
बारिश की झरती बूँदें।
सुखद अनुभव देती,
सावन की फुहारें।।

मन्द-मन्द हवा के झोंके,
फूहारों के संग खेलें।
सावन के गीत मल्हार गाकर,
झूला खूब झूलें।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

2

## सावन के सोमवार

हिंदी पंचांग का पांचवां,
मास है श्रावण मास।
मिले आशीष प्रभु शिव का,
लगाते भक्त हैं आस।

शुभ दिन श्रावण मास के,
सोमवार हैं कहलाते।
सावन सोमवार के व्रत की,
महिमा सब है गाते।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

3

## सावन के झूले

सावन आया हरियाली आयी
बच्चों ने झट रस्सी मँगवायी।
पेड़ के ऊपर सबने डाले झूले,
बच्चे बड़े सब खुशी में फुले।।

सखियाँ मिलकर गीत सुनाती,
झूला झूल के मगन हो जाती।
प्रेम, खुशी का यह है प्रतीक,
मिलकर गाएँ सावन के गीत।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

4

## सावन के हिंडोले

सावन आते ही झूले की
यादें ताजा हो जातीं हैं।
मन्दिर, घर-बाहर बच्चों को,
झूला, झूलते दिखातीं हैं।।

ब्रज में ठाकुर जी सावन में,
हिंडोले पर झूला झूलते हैं।
बर्षा होती रहती हल्की,
भक्तों को दर्शन देते हैं।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### भादों:कृष्ण जन्माष्टमी

सावन के बाद भादो आता,
कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व लाता।
वर्षा ऋतु का त्योहार है प्यारा,
कृष्णजी की महिमा बताता न्यारा।।

मन्दिरो, घरो मे झाँकिया सजती,
जैसे कृष्णजी की कहानी कहती,
चरणामृत, पाग का भोग लगता,
वर्षा का त्योहार हमे प्यारा लगता।।

**रचना**
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

## 2

### सावन के झूले

सावन के महीने में,
झूले पड़ गए पेड़ और पार्कों में।
सखियाँ झूला झूल रही हैं,
मल्हार मिलकर गा रही हैं।।

सोलह सिंगार करके,
मन ही मन मुस्कुरा रही हैं।
बच्चे भी झूला झूल रहे हैं,
खूब मस्ती में झूम रहे हैं।।

**रचना**
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

## 3

### सावन: रुद्राभिषेक

सावन का पावन महीना आता,
संग अपने खुशियां खूब लाता।
शिव की भक्ति से पूजा करते,
रूद्राभिषेक से उनका करते।।

कॉवर यात्रा लेकर,
लोग शिव दर्शन को जाते।
सब भक्ति भाव से मिलकर,
बम-बम भोले बोलते।।

**रचना**
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

## 4

### तीज की हरियाली

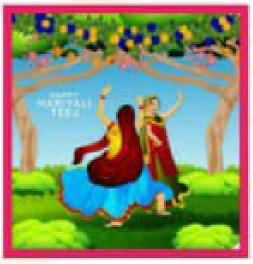

हरियाली तीज सावन,
में सुहागिनें है मनाती।
हरी चूड़ियां और श्रृंगार,
कर झूले पर गीत गाती।।

तीज के दिन शिव पार्वती,
की मंदिर में पूजा होती।
बनी रहे सब पर कृपा,
यही इच्छा प्रभु से करती।।

**रचना**
नीलम भास्कर ( स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

18/07/2025 शुक्रवार

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### सावन

आया सावन झूमकर,
गा रहे मेघ मल्हार।
पंछी कलरव कर रहे,
शीतल बहे बयार।।

पेड़ों पर झूले पड़े,
नाच रहे हैं मोर।
टप टप बूँदें गिर रही,
मन में उठी हिलोर।।

पूनम नैन ( स० अ० )
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

## 2

### बारिश का मौसम

रिमझिम इस बारिश में,
दोस्तों संग मजा आ रहा।
छम-छम करके पानी में,
नहाने का मजा आ रहा।।

कागज की नाव देखो,
पानी में आगे चल रही।
बाग और बगीचे में,
सुन्दर कलियाँ खिल रही।।

अनुप्रिया यादव ( स०अ० )
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

## 3

### रिमझिम बारिश

रिमझिम-रिमझिम बारिश से,
सारी प्रकृति है मुस्काती।
रंग-बिरंगी फूलों की सारी,
कलियाँ भी खिल जाती।।

नयी सुन्दरता बारिश,
धरती पर है लाती।
कोयल और पपीहा सब,
मस्त मगन हो गातीं।।

मृदुला वर्मा ( स०अ० )
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

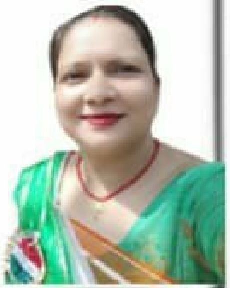

## 4

### झमाझम बारिश

चम-चम बिजली चमकी,
बादल घिरे आसमान में।
झमाझम बारिश बरस रही,
पानी भर रहा मैदान मे।।

मिट्टी की खुशबू महक उठी,
मोर नाच उठे खुशी मे।
छम-छम बूँदो के आनन्द संग,
बच्चे नाव चला रहे पानी में।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

19.07.2025

शनिवार

# बाल साहित्य सृजन

## 1

## घेवर

कभी रबड़ी संग कभी मलाई चढ़ा,
हर रूप में घेवर में स्वाद है सदा।
कुरकुरा किनारा बीच में नरम जाल,
घेवर की थाली में बस प्यार ही प्यार।।

घेवर का जादू सबको लुभाए,
आओ घेवर के स्वाद को अपनाएं।
परम्परा का प्रतीक संस्कृति का संसार,
घेवर की मिठास, संस्कृति का आधार।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

## 2

## गाजर का हलवा

गाजर, दूध, घी व मावा,
चीनी संग है खूब पकाया।
फिर उसमें जब डाला मेवा,
तैयार है गाजर का हलवा।।

सर्दी में हो खास ये हलवा,
परोसा जब खुशबूदार हलवा।
इलायची संग बहुत है भाता,
खाने को है मन ललचाता।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

## 3

## मालपुआ

दही, मैदा, चीनी, सौंफ,
इलायची व घी से बना।
बहुत स्वादिष्ट मालपुआ,
सबको भाये मालपुआ।।

रबड़ी संग परोसा जाता,
नाश्ते में परोसा जाता।
मलाई सा मुलायम बनता,
बिहार, राजस्थान का मालपुआ।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

## 4

## गुलाब जामुन

गुलाब जामुन है एक मिठाई,
चुन्नू मुन्नू के मन को भाई।
बहुत मुलायम, होती रसीली,
मुँह में डालो घुल जाती फुर्तीली।।

खोया- मैदा से मिलकर बनता,
चीनी के चासनी में है घुलता।
काले- काले रंग का होता है,
थीमी आँच में पकता है।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

# बाल साहित्य सृजन

1

## गुझियाँ

मैदे से बनती है पूरी,
मावा और सूजी से कसार।
जितने चाहे मेवे डालो,
बन जाएँ गुझियाँ मजेदार।।

सावन के इस मौसम में,
घर-घर होती है तैयारी।
बहनो के सिंधारे में,
गुझियाँ लाना बहुत सारी।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

2

## बालूशाही

बालूशाही एक मिठाई ,
भरी हुई है रस से भाई।
गरम-गरम है सबको भाती,
मिनटों में चट हो जाती।।

चाशनी में तर यह रहती,
मैदा चीनी से है बनती।
ज्यादा मत इसे खा जाना,
वरना पड़ जाएगा रोना।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

3

## घेवर

घेवर है एक मिठाई,
बनाता इसको हलवाई।
सावन में यह खूब दिखता,
तीज, रक्षाबन्धन पर बनता।।

यह मिठाई है राजस्थानी,
देख मुँह में आता पानी।
मैदा, घी, शक्कर से बन,
घेवर होता सबकी पसन्द।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

4

## फैनी

फैनी हैं एक प्रकार की सेवइयाँ,
रक्षाबन्धन के समय माँग बढ़ती है।
दूध डालकर जाती हैं पकायीं,
खाने में बड़ी स्वादिष्ट लगती हैं।।

राखी में बहनों के घर जातीं फैनी,
चलन भेजने का बहुत पुराना है।
सफेद और पीली होती है फैनी,
बहनों के घर जरूर लेकर जाना है।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़
करहल, मैनपुरी

22/07/2025 मंगलवार

# बाल साहित्य सृजन

## 1

## हरियाली अमावस्या

सावन माह की अमावस्या,
'हरियाली अमावस्या' होती।
बर्षा की फुहारें गिरतीं,
रिम-झिम बारिश होती।।

मन्दिरों में काली-घटा सजती,
काले, मेघ गरज दिखाएँ।
कृष्णपक्ष इस दिन पूर्ण होता,
बहन, बेटियाँ मायके आएँ।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

## 2

## खीर-पूड़ी

पारम्परिक भारतीय पकवान,
खीर-पूड़ी है कहलाती।
त्योहारों, विशेष अवसरों पर,
खीर-पूड़ी बनायी जाती।।

खीर, मलाईदार और मीठी,
बहुत ही स्वादिष्ट होती।
पूड़ी कुरकुरी और नमकीन,
बहुत ही मन को भाती।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

## 3

## हरियाली तीज

हरियाली तीज है त्योहार,
धैर्य, शक्ति और भक्ति का।
श्रावण मास शुक्ल पक्ष की,
लगती तिथि तृतीया।।

सजे मेंहदी, झूले, लोकगीत,
नाम दूजा कजली तीज।
सुहागिनें करतीं खूब श्रृंगार,
शिव-पार्वती के पूजन का त्योहार।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

## 4

## घेवर

मधुमक्खी के छत्ते सी बनावट,
डिस्क के जैसा होता आकार।
घी और मैदे से बनती घेवर,
यह लगती खाने में मजेदार।।

राजस्थानी मशहूर मिठाई को,
सावन माह में खूब बनाते हैं।
सिंजारा में बेटी को उपहार में देते,
कृष्ण को छप्पन-भोग में लगाते हैं।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

23/07/2025 बुधवार

# बाल साहित्य सृजन

1

## सावन के गीत

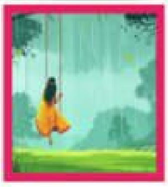

सावन का महीना लगता प्यारा,
बारिश की बूँदो से लगता न्यारा।
कवि मन मे रचना का होता आगाज,
सावन के गीतो का बनता संसार।।

सावन के गीत होते बड़े प्यारे,
कवियो ने रचे भी खूब न्यारे।
मन को सुकून, आराम दे देते,
शीतलता भरी मुस्कान दे देते।।


रचना
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

2

## सुहाना वर्षाकाल

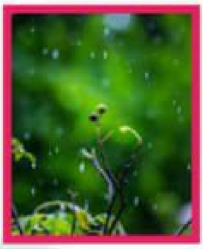

सुहाना वर्षा काल आया,
सभी के मन को है भाया।
कभी नन्ही नन्ही बुंदिया पड़ती,
कभी कभी तेज बारिश है पड़ती।।

चारों ओर हरियाली छा रही है,
खेतों में खेती लहला रही है।
बच्चे वर्षा काल का लुप्त उठाते,
बड़े भी तन-मन को भिगोते।।


रचना
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

3

## हरियाली की छटा

सावन के महीने में,
हरियाली छा जाती।
इस सुहाने मौसम में,
धरती हरी-भरी हो जाती।।

हरियाली की छटा बिखर जाती,
पर्यावरण भी शुद्ध होता।
मानसून की शुरुआत होती,
जो सबके मन को भाता।।


रचना
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

4

## गूँजते शिवालय

सावन माह में होती जयकार,
गूंजे शिवालय भक्ति कतार।
सबकी इच्छा पूर्ण करें अरदास,
भगवान शिव करें मानव विकास।।

शिवालय में हर भक्त आता,
शिव दर्शन से सब सुख पाता।
मन को शांति मिलती यहां पहुंच,
प्रभु कृपा से मिटते सारे दुख।।


रचना
नीलम भास्कर ( स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

24/07/2025

गुरुवार

# बाल साहित्य सृजन

1

## सावन

सावन का महीना है,
पावन ये महीना है।
सब कुछ हरा-भरा सा,
पावन ये महीना है।।

धुले-धुले हैं पेड़-पौधे,
खाली पोखर भर जाता।
भाई-बहन के प्रेम से,
इसका मान बढ़ जाता।।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

## सावन और शिवभक्ति

सावन के मौसम में देखो,
टिप-टिप बारिश होती है।
खेतों में फिर से देख,
एक हरियाली सी छाती है॥

सावन के मौसम में तो भक्त,
शिव भक्ति में डूब जाते हैं।
हर-हर महादेव का देखो,
वो बस जाप किए जाते हैं॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

## सावन और त्यौहार

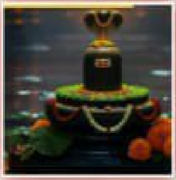

शुरू हो गए अब त्यौहार,
बच्चों हो जाओ तैयार ।
सावन का मौसम है आया,
देखो हर घर घेवर आया।।

स्वतंत्रता दिवस है सबको भाये,
राष्ट्रीय ध्वज को शीश नवाये ।
राखी पर आयेगी बहना,
हँसी खुशी से मिलकर रहना ।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

## बरसात

टिप टिप करती बूंदें गिरती,
तन मन की अगन है हरती।
हर प्यासे की प्यास बुझाती,
नव पल्लव, कली खिल जाती।।

भीग रहे हैं पत्ते-पत्ते,
मधुबन में छाई हरियाली।
कोयल, दादूर, पपीहा बोले,
सरगम के सुर चहूं ओर बोलें।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

25/07/2025

# बाल साहित्य सृजन

शुक्रवार

1

## हरियाली तीज

सावन आया, बरखा लाया,
तीज का त्यौहार आया।
सब मिलकर झूला झूलेंगे,
पेंग बढ़ाकर नभ छू लेंगें।

हाथों में मेंहदी लगाएँगे ,
घेवर और गुझिया खाएँगे।
सखियों के संग मिलकर
हरियाली तीज मनाएँगे।।

पूनम नैन ( स० अ० )
उ० प्रा० कम्पोजिट विद्यालय मुकुंदपुर
छपरौली,बागपत

2

## सावन

सावन के महीने में,
खूब बारिश हो रही।
बारिश के मौसम में,
देखो हरियाली छा रही।

नयी-नयी पत्तियाँ,
पौधों में निकल रही।
सुन्दर-सुन्दर फूलों से,
बगिया महक रही।।

अनुप्रिया यादव ( स०अ० )
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा फतेहपुर

3

## सावन की फुहार

सावन में चारों ओर,
रिमझिम बरसे फुहार।
धानी सी हरियाली से,
रंग गया सारा संसार।।

घुमड़-घुमड़ चारों ओर,
काले-काले बादल छाये।
बयार चली है ठण्डी-ठण्डी,
और फूल भी मुस्काये।।

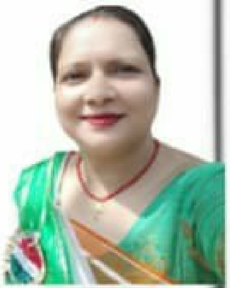

मृदुला वर्मा ( स०अ० )
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

4

## झमाझम बारिश

चम-चम बिजली चमकी,
बादल घिरे आसमान में।
झमाझम बारिश बरस रही,
पानी भर रहा मैदान मे।।

मिट्टी की खुशबू महक उठी,
मोर नाच उठे खुशी मे।
छम-छम बूँदो के आनन्द संग,
बच्चे नाव चला रहे पानी में।।

अमित गोयल (स०अ०)
प्रा० वि० निवाडा, बागपत,
जनपद बागपत

26.07.2025

# बाल साहित्य सृजन

शनिवार

## 1

## जलेबी

कभी रबड़ी संग,
कभी मलाई का मेल।
कभी है अकेली,
फिर भी स्वाद का खेल।।

जलेबी के साथ बनता,
हर उत्सव खुशहाल।
जलेबी बिन अधूरी,
हर खुशी की बात।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी(1-8)
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

## 2

## राजभोग

राजभोग खाने का योग,
जब मौका बने सुनहरा जी।
रस से भरी लगे भोग हरि,
नरम–नरम ये प्यारा जी।।

काजू बादाम चीनी का साथ,
है इसका स्वाद निराला जी।
घुले मुंह में स्वाद,रहे कुछ ना याद,
चलो खा लो आज भर प्याला जी।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर, खजनी

## 3

## इमरती

जलेबी की बड़ी दीदी,
चाशनी में डूबी इमरती।
बहुत सुंदर दिखती है,
खाने में स्वादिष्ट होती है।।

उड़द दाल, घी व केसर,
से बनती स्वादिष्ट इमरती।
फूल सी सुन्दर दिखती,
हमको भाती है इमरती।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

## 4

## बालूशाही

हम सबकी है यह मिठाई,
कहते इसको बालूशाही।
मैदा से यह बनती है,
गोल गोल यह बनती है।।

मोअन इसमें पड़ता है,
खूब गूँथना पढ़ता है।
खूब चिकनाई में पकाते हैं,
चीनी की चासनी में डालते हैं।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### डोसा

दक्षिण भारत का व्यंजन,
डोसा कहलाता है।
दाल-चावल का होता घोल,
बच्चों-बूढ़ों को भाता है।।

गर्म-गर्म जाता है परोसा,
हो पनीर या मसाला डोसा।
अति लजीज जायकेदार,
चटनी भी होती है मजेदार।।

रचना-
शालिनी (स०अ०)
प्रा० वि० कूँड़
करहल, मैनपुरी

## 2

### साँभर

लौकी और अरहर की दाल,
जो भी चाहो सब्जी डाल।
राई, मिर्च का तड़का लगा,
डाल इमली इसे उबाल।।

सब मिलकर साँभर तैयार,
होता यह पौष्टिक आहार।
डोसा, इडली संग खा लो,
सेहत को हानि से बचा लो।।

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

## 3

### छोले

आलू, मटर, चने से बनते,
सबको ही यह अच्छे लगते।
पौष्टिकता से हैं भरपूर,
खाना इनको सभी ज़रूर।।

छोले-चावल, छोले-पूरी,
और संग हों छोले-भटूरे।
खाने में आनन्द मिलेगा,
खा लो इनको पूरे-पूरे।।

रचना-
बृजराज सारस्वत(इं०प्र०अ०)
क० वि० गोपालगढ़
मथुरा, मथुरा

## 4

### भटूरे

पूरी से बड़ा होता भटूरा,
फूला-फूला होता भटूरा।
खाने में अति स्वादिष्ट भटूरा,
मैदा, सूजी से बनता भटूरा।।

बाजार में हम जब भी जाते,
छोलों के संग इसको खाते।
साथ में होता इसके आचार,
हरी चटनी और प्याज साथ।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०- निवाड़ा
बागपत, बागपत

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### रक्षाबन्धन

मेरी प्यारी-प्यारी बहना,
राखी लेकर आएँगी।
माथे पर तिलक लगाकर,
कलाई में राखी सजाएँगी।।

बहन कहेगी भैया मेरा,
सारी खुशियाँ पाएगा,
भाई करेगा रक्षा तेरी,
वचन यही निभाएगा।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०- भौंरी
मानिकपुर, चित्रकूट

## 2

### तीज उत्सव

हरियाली तीज सावन की,
वर्षा-ऋतु में मनायी जाती।
शिव-पार्वती का पूजन करके,
सौभाग्य की आशीष पायी जाती।।

तीजों पर हम झूला झूलते,
कजरी, मल्हार गाते हैं।
बहनें मायके में जातीं,
भाई बुलाने आते हैं।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
मथुरा, मथुरा

## 3

### ठाकुर रसोई

भगवान जी का प्रसाद,
ठाकुर रसोई में बनता।
मन्दिर के रसोइयों द्वारा,
यहाँ प्रसाद बनाया जाता।।

यमुना जल का प्रयोग कर,
छप्पन-भोग बनाया जाता।
मन्दिर का यह पवित्र स्थान,
ठाकुर रसोई कहलाता।।

रचना-
उमा ठाकुर (इं०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय राजपुर
मथुरा, मथुरा

## 4

### भण्डारा

किसी विशेष अवसर पर,
मन्दिरों में होता भण्डारा।
ईच्छा पूरी होने पर विनती,
श्रद्धा से करवाते भण्डारा।।

भण्डारे की आलू-पूरी,
सबके मन को भावें।
भक्ति से पूर्ण ये प्रसाद,
बढ़-चढ़कर सब जन पावें।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० जारी भाग 1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

# बाल साहित्य सृजन

## 1

### भादों की रात

भादों की रात की कहानी,
रही है ना किसी से अनजानी।
वो काली रात थी बहुत डरावनी,
बचपन मे सुनाया करती थी नानी।।

इसी रात मे प्रभु कृष्णजी जन्मे,
नन्द बाबा के घर आनंद बरसे।
भादो की काली रात की कहानी,
अब है हर घर मे जानी पहचानी।।

**रचना**
इला सिंह (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय
पनेरूवा, अमौली, फतेहपुर

## 2

### मनभावन सावन

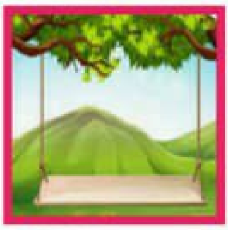

मनभावन सावन आया है,
खुशियों की बहार लाया है।
नन्ही नन्ही फुहार पड़ रही है,
तन मन को भीगो रही हैं।।

पपीहा कोयल बोल रहे हैं,
सबके मन को लुभा रहे हैं।
चारो ओर हरियाली छाई,
खेतों में फसल है लहलाई।।

**रचना**
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,मेरठ

## 3

### बारिश की शाम

बारिश की शाम जब होती,
रिमझिम बूंदें धरती पर गिरती।
काले-काले बादल आते,
बारिश संग अपने लाते।।

बारिश में सब मिलकर,
मौसम का मजा लेते।
गर्म -गर्म पकौड़े बनाकर,
खूब मजे से उनको खाते।।

**रचना**
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा,कानपुर देहात

## 4

### आषाढ़ का दिन

वर्ष में आषाढ़ का मौसम,
सावन के पहले है आता।
काले बादल नभ को घेरे,
हल्की उमस बांधे डोरे।।

तपती गर्मी से राहत मिलती,
वर्षा सबको आनंदित करती।
होता यह मौसम मिला-जुला,
बारिश और गर्मी मिला- खिला।।

**रचना**
नीलम भास्कर ( स०अ०)
उ०प्रा०वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

31/07/2025

गुरुवार

# बाल साहित्य सृजन

1

## बारिश और सावधानी

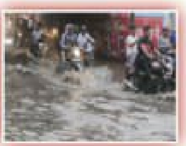

बरसात का रिमझिम आना,
हरियाली सब ओर छा जाना।
पर बच्चों खुद को ऐसे में,
खुद को भी तुम बचाना।।

मच्छर से, कीड़ों से बचना,
ज़्यादा न भीगे रह जाना।
गीले हाथों से बिजली की,
चीजें बिल्कुल नहीं चलाना।

ज्योति सागर' सना
पी० एम० श्री उ० प्रा० वि० (1-8)
सिसाना, बागपत

2

## सावन और त्योहार

सावन जब-जब आता है,
नयी उमंग लाता है।
गरज गरज कर बादल,
अपने संग बरसात लाता है॥

पेड़ों में देखो फिर से,
झूले पड़ जाते हैं।
आषाढ़ी और गुड़िया भी,
सावन में मनाया जाते हैं॥

शिप्रा सिंह (स.अ.)
उ० प्रा० वि० रूसिया,
अमौली, फतेहपुर

3

## बरसात और गर्मी



बरसात का मौसम सबसे न्यारा,
लगता है हर किसी को प्यारा।
उछल कूद करते सब बच्चे,
पड़ता जब-जब बूंदो का झारा।।

उमस भरा भी बहुत ये मौसम,
गर्मी में नहीं मिलता चैन।
बदरी जब तक बारिश न लाये,
तके आसमां टक टक नैन।।

पारुल चौधरी (स॰अ॰)
प्राथमिक विद्यालय बसी-3
खेकड़ा, बागपत

4

## सावन

तेज हवा के झोंके आये,
कजरी, मल्हार गीत सुनायें।
साथी मिल कर गाये झूमे ,
जीवन के हर राह दिखायें।।

मोर, पपीहा, दादुर गायें,
बुंदों में सरगम धुन समाये।
हर पल-छिन आत्मसात करें हम,
इश नूपुर ज्यों बजती हो छम-छम।।

वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि०चन्दवक
डोभी, जौनपुर

# मिशन शिक्षण संवाद

# बाल साहित्य सृजन

## रचनाकारों की सूची

1- बृजराज सारस्वत, मथुरा
2- भावना शर्मा, मेरठ
3- जुगल किशोर, झाँसी
4- सीमा शर्मा, बागपत
5- नैमिष शर्मा, मथुरा
6- उमा ठाकुर, मथुरा
7- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
8- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
9- आरती यादव, कानपुर देहात
10- इला सिंह, फतेहपुर
11- नीलम भास्कर, बागपत
12- माला सिंह, मेरठ
13- पारुल चौधरी, बागपत
14- वन्दना यादव, जौनपुर
15- शिप्रा सिंह, फतेहपुर
16- ज्योति सागर, बागपत
17- पूनम नैन, बागपत
18- अमित गोयल, बागपत
19- अनुप्रिया यादव, फतेहपुर
20- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
21- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
22- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
23- सुषमा त्रिपाठी, गोरखपुर
24- रूपी त्रिपाठी, कानपुर देहात

**तकनीकी सहयोग**

1- नैमिष शर्मा, मथुरा
2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

**मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट**

**संकलन :- काव्यांजलि दैनिक सृजन टीम**